

विश्व न्याय मन्दिर

1 अगस्त 2014

विश्व के बहाईयों को,
परम प्रिय मित्रगण

दो साल से अधिक बीत गये जब रिजवान 2012 में हमने सैंटियागो, चिली में महाद्वीपीय मशरिकुल-अज़कारों की श्रृंखला में अंतिम मंदिर के निर्माण के साथ-साथ दो राष्ट्रीय और पाँच स्थानीय उपासना मंदिरों के निर्माण की योजना की घोषणा की थी। ये कार्य निर्बाध रूप से उस सामुदायिक जीवन को उन्नत बनाने से जुड़े हैं जो श्रद्धा और सेवा की भावना से सम्प्रति सर्वत्र प्रोत्साहित किये जा रहे हैं, “पूरी धरती पर उस ईश्वर के नाम पर जो सभी धर्मों का स्वामी है” उपासना मंदिरों के निर्माण का बहाउल्लाह द्वारा मानवजाति को दिया गया यह उत्कृष्ट दायित्व सामुदायिक जीवन को उन्नत बनाने के लिये अगला कदम है -- ऐसे केन्द्र, जहाँ व्यक्ति “एक-दूसरे से सद्भावपूर्ण वातावरण में मिल कर” ईश्वर के शब्दों को सुनने के लिये एकत्र हों और अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करें” और जहाँ से “स्तुति के स्वर प्रभु-साम्राज्य तक गूँजें” और “ईश्वर की सुरभि” चतुर्दिक फैले।

दुनिया के प्रत्येक भाग से हमारे आह्वान से मिली प्रतिक्रिया से हम काफी प्रभावित हुए हैं। खासकर उन देशों व इलाकों में जो हाल ही उपासना मंदिर के निर्माण के लिये निर्धारित किये गये हैं, हमने मित्रों के बीच स्वाभाविक प्रसन्नता की अभिव्यक्ति; हाथ में लिये गये इस महत्वपूर्ण कार्य में अपने हिस्से की जिम्मेदारी को पूरा करने और वैसी गतिविधियों की सक्रियता को बढ़ाने के प्रति उनकी आसन्न और हार्दिक प्रतिबद्धता जो उनके समुदाय के बीच मशरिकुल-अज़कार के निर्माण से जुड़ी हैं, उनका समय, शक्ति और भौतिक संसाधनों का विभिन्न रूपों में त्यागपूर्ण योगदान; और पूरी तरह से ईश्वर के स्मरण के लिये उनके बीच बनाये जाने वाले मंदिर-भवन के वास्तविक उद्देश्य के प्रति अपने जनमानस को जागरूक करने का उनका निरन्तर प्रयास देखा है। निसंदेह, सर्वमहान नाम के समुदाय की तत्पर प्रतिक्रिया इन सामूहिक कार्यों को आगे बढ़ाने की इनकी क्षमता का सही शुभ संकेत है।

2012 में बहाई विश्व केन्द्र में खोले गये मंदिर तथा ‘साइट्स’ कार्यालय के सहयोग से कौंगो तथा पपुआ न्यू गिनिया के प्रजातांत्रिक गणराज्य और साथ ही, कम्बोडिया, कोलम्बिया, भारत, केन्या और वनुआतु की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाएँ शुरुआती तैयारियों के साथ तेजी से

आगे बढ़ी हैं। प्रत्येक देश में एक समिति गठित की गई जो समुदाय विशेष की हर स्तर की संस्थाओं और एजेंसियों के साथ उन साधनों की पहचान करेगी जिनके सहारे व्यापक प्रतिभागिता को प्रोत्साहित किया जा सके और इन परियोजनाओं की घोषणा के बाद मित्रों में आये उत्साह को दिशा प्रदान की जा सके। इन राष्ट्रीय और स्थानीय परियोजनाओं का एक अन्य व्यावहारिक चरण उपयुक्त स्थान का चुनाव करना है, एक ऐसी भूमि का टुकड़ा जो आकार में सामान्य हो, आवागमन की दृष्टि से उपयुक्त हो और जहाँ आसानी से पहुँचा जा सके। सात में से चार भूभाग अब तक हम प्राप्त कर चुके हैं। प्रत्येक परियोजना के लिये एक निर्माण कार्यालय स्थापित किया जा रहा है, जो तकनीकी, वित्तीय तथा कानूनी मामलों की व्यवस्था करने में सहयोग करेगा। मंदिर कोष में पूरी दुनिया के मित्रों द्वारा उदारतापूर्वक दिये गये दान से शुरुआती दौर के कार्य आगे बढ़ रहे हैं। इस कोष में व्यापक और त्यागपूर्ण सहयोग अगले चरणों के काम की निरन्तर प्रगति सुनिश्चित करेगा।

चार देशों में ये परियोजनाएँ मंदिर-भवन के डिजाइन बनाने के पड़ाव पर पहुँच चुकी हैं। यह प्रक्रिया सम्भावित वास्तुशिल्पियों के चुनाव और ढाँचे की जरूरतों की संक्षिप्त व्याख्या करते हुए वास्तुशिल्पीय नोट से शुरू होती है और इसके परिणामस्वरूप अंतिम रूप से चुने गये डिजाइन के लिये अनुबंध किया जाता है। वास्तुशिल्पियों के सामने एकमात्र चुनौती "अस्तित्व के संसार में जितना श्रेष्ठ सम्भव हो सके" वैसा डिजाइन बनाने की होती है, जो स्थानीय संस्कृति तथा वहाँ के लोगों के दैनिक जीवन से यह कार्य रचनात्मकता और कौशल की माँग करता है जो सौन्दर्य, लालित्य और गरिमा को शालीनता, कार्य-सहजता और मितव्ययिता के साथ जोड़ सके। सभी जगहों से अनेक वास्तुशिल्पियों ने सेवा देने की इच्छा व्यक्त की है, जहाँ ऐसे योगदानों का स्वागत है, राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाएँ जैसे वास्तुशिल्पियों को काम में लगाने की ओर उचित ध्यान दे रही हैं जो उस क्षेत्र विशेष से भलीभाँति परिचित हों जिस क्षेत्र में भवन का निर्माण होगा।

दक्षिण अमेरिका के महाद्वीपीय उपासना मंदिर का निर्माण कार्य चिली में अपनी समाप्ति की ओर अग्रसर है। लोहे के फ्रेम का ऊपरी ढाँचा करीब-करीब पूरा बन चुका है, अंदर के पारदर्शी पत्थर के पैनल रखे जा रहे हैं और प्राकृतिक भूनिर्माण तथा सहायक सुविधाओं के निर्माण के कार्य निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रगति पर हैं। अमेरिकी प्रदेशों के सहयोग से, सैंटियागो के मित्रगण, आस-पास के लोगों को उपासना मंदिर के प्रति जागरूक करने के लिये पूरी निष्ठा से प्रयत्नशील हैं, समुदाय-निर्माण के प्रयास में अधिक से अधिक लोग भाग ले रहे हैं और मंदिर के निर्माण-स्थल पर प्रार्थना तथा इस उद्यम के व्यावहारिक और आध्यात्मिक

पहलुओं पर चर्चा के लिये बड़ी संख्या में लोगों का स्वागत किया जा रहा है। उस देश में वर्तमान में, 2016 में मंदिर के उद्घाटन के बाद अवश्यम्भावी अनेक मांगों को ध्यान में रखते हुए, कदम उठाये जा रहे हैं।

जहाँ दुनिया भर में मित्रगण इन उत्साहवर्धक विकास के कार्यों की खुशियाँ मना रहे हैं वहीं एक-के-बाद एक क्लस्टरों की प्रक्रियाओं के सशक्त होने की ओर उनकी ऊर्जा केन्द्रित है। इस प्रकार वे आराधना और समाज की आध्यात्मिक, सामाजिक तथा भौतिक अवस्था को ऊपर उठाने के अपने प्रयासों के गत्यात्मक पारस्परिक प्रभाव को समझने में भी विफल नहीं हुए हैं। हमारी कामना है कि वे सब जो नगरों और शहरों में पड़ोस के क्षेत्रों और गाँवों में इस प्रकार के कार्य के लिये प्रयत्नशील हैं, उन प्रयासों से अन्तर्दृष्टि प्राप्त करें जो बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में पूरब में और तत्पश्चात् पश्चिम में, पहले दो उपासना मंदिरों के निर्माण के लिये किये गये थे।

इश्काबाद के निष्ठावान अनुयायियों की एक टोली ने, जो फारस से आ बसी थी और जिसने कुछ समय के लिये तुर्किस्तान में शांति तथा तसल्ली पाई थी, एक ऐसी जीवन शैली के निर्माण में अपनी ताकत लगा दी जो बहाउल्लाह के प्रकटीकरण में निहित महान आध्यात्मिक और सामाजिक सिद्धान्तों को प्रतिबिम्बित करती थी। कुछ ही दशकों में यह टोली, जो मूल रूप से कुछ परिवारों के संयोग से बनी थी, अन्य लोगों का साथ पाती गई और कुछ हजार अनुयायियों में तब्दील हो गई। गहरी मित्रता की भावना से सुरक्षित और उद्देश्य की एकता तथा विश्वास के आचरण से सजीव यह समुदाय उच्च स्तर के सामंजस्य और विकास को प्राप्त करने में समर्थ हुआ, जिसके लिये इसे सम्पूर्ण बहाई जगत में ख्याति मिली। दिव्य शिक्षाओं की अपनी समझ से संचालित और उन्हें जो धार्मिक स्वतंत्रता दी गई थी उसकी परिधि में रहते हुए इन मित्रों ने ऐसी परिस्थितियों के निर्माण के लिये कड़ी मेहनत की ताकि एक मशरिकुल-अज़कार की स्थापना की जा सके -- "प्रत्येक बहाई समुदाय के बीच शीर्ष की संस्था"। नगर के मध्य में एक उचित भूभाग पर जिसका अधिग्रहण स्वयं 'आशीर्वादित सौंदर्य' की सहमति से कुछ वर्ष पहले किया गया था, सामुदायिक कल्याण की सुविधाओं के साथ एक मीटिंग हाल, बच्चों के लिये स्कूल, आगन्तुकों के लिये हॉस्टल और अन्य सुविधाओं के साथ एक क्लीनिक का निर्माण किया गया। इश्काबाद के बहाईयों की असाधारण उपलब्धियों का यह प्रतीक बहाईयों के उन सफल वर्षों में उनकी समृद्धि, उदारता और बौद्धिक तथा सांस्कृतिक सम्पदा के लिये ख्याति दिला चुका था। उन्होंने अपना ध्यान यह सुनिश्चित करने पर केन्द्रित किया कि एक ऐसे समाज में जहाँ शिक्षा का, खासकर लड़कियों के बीच, नितान्त अभाव था, सभी बहाई बच्चे और युवा साक्षर

हों। एकजुट प्रयास और प्रगति के ऐसे माहौल में, विकास के हर स्तर पर अब्दुल-बहा द्वारा प्रोत्साहित, एक शानदार उपासना मंदिर बन कर उभरा -- उस क्षेत्र का सर्वाधिक प्रसिद्ध भवन। बीस सालों से अधिक समय तक मित्रों ने अपने ऊँचे उद्देश्य के स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति की: आराधना के एक केन्द्रीय स्थल की स्थापना, सामुदायिक जीवन का शक्तिपूँज, एक ऐसी जगह जहाँ लोग अपने दैनिक काम-काज के लिये घरों से निकलने के पहले, तड़के सुबह प्रार्थना और परस्पर मन की बातें करने के लिये एकत्र हुआ करते थे। अन्ततः अधर्म की ताकतें उस क्षेत्र में बलवती हुईं और आशाओं पर पानी फेर गई, (किन्तु) इश्काबाद में थोड़े समय एक मशरिकुल-अज़कार का रहना उन अनुयायियों की टोली की इच्छा-शक्ति और प्रयासों का एक चिरस्थायी प्रमाण है जिन्होंने 'रचनात्मक शब्द' की शक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर एक समृद्ध जीवनशैली को स्थापित किया।

इश्काबाद में उपासना मंदिर का निर्माण-कार्य शुरू होने के कुछ ही समय बाद पश्चिमी गोलार्ध में उत्तरी अमेरिका के नवोदित बहाई समुदाय के सदस्य स्वयं अपना एक मंदिर बना कर अपनी आस्था और श्रद्धा का प्रदर्शन करने के लिये प्रेरित हुए और उन्होंने सन 1903 में मास्टर की सहमति के लिये लिखा। उस समय से मशरिकुल-अज़कार बहाउल्लाह के समर्पित सेवकों के भाग्य से अविच्छेद्य रूप से जुड़ गया। हालाँकि दो विश्व युद्धों और व्यापक आर्थिक मंदी के कारण इस विशाल परियोजना की प्रगति कई दशकों तक बाधित रही, (तथापि) विकास का हर चरण समुदाय के विस्तार और प्रशासन के फैलाव से प्रगाढ़ रूप से जुड़ा रहा। ठीक उसी दिन जब मार्च 1909 में कार्मल पर्वत पर बाब के पावन अवशेष समाधिस्थ किये जा रहे थे, प्रतिनिधिगण "बहाई मंदिर एकता" नामक संस्था की स्थापना के लिये एकत्र हुए। एक ऐसी राष्ट्रीय संस्था जिसका निर्वाचित बोर्ड इस महाद्वीप में दूर-दूर तक के स्थानीय समुदायों के लिये प्रेरणा-केन्द्र बना। इस गतिविधि ने शीघ्र ही युनाइटेड स्टेट्स और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के गठन को प्रोत्साहित किया। उत्तरी अमेरिका की अपनी यात्रा के दौरान स्वयं अब्दुल-बहा ने पश्चिम के उस मातृ-मंदिर का, विशाल आध्यात्मिक शक्तियों के वरदान के साथ, शिलान्यास किया। और इस ऐतिहासिक उद्यम के लिये दान अफ्रीका, एशिया, यूरोप, लैटिन अमेरिका और प्रशांत महासागर के देशों से बरस पड़ा, जो पूरब और पश्चिम के देशों के बहाईयों की एकजुटता और त्याग का प्रदर्शन है।

जब बहाउल्लाह के अनुयायी अपना ध्यान ईश्वर पर केन्द्रित कर रहे हों और प्रतिदिन 'उनके' स्मरण में अपने को निमग्न कर रहे हों निरन्तर 'उसके नाम' से प्रयासरत हों (तब) उन्हें अब्दुल-बहा द्वारा एक अनुयायी को कहे गये इन प्रभावशाली शब्दों से प्रेरणा ग्रहण करने दें, जो

(अनुयायी) उनके निरन्तर और प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन में बनाये जा रहे पहले उपासना मंदिर के निर्माण के प्रति समर्पित था:

सम्पूर्ण अनासक्ति और आकर्षण की ज्वाला से प्रदीप्त होकर शीघ्र इश्काबाद जाओ और ईश्वर के मित्रों को अब्दुल-बहा का उत्साहवर्धक अभिवादन पहुँचाओ। तुम प्रत्येक के चेहरे को चूमो और सब को इस सेवक का गहन और सच्चा स्नेह दो। अब्दुल-बहा की ओर से तुम मिट्टी की खुदाई करो, गारा-मसाला ढोओ और मशरिकुल-अज़कार को बनाने के लिये पत्थर लाद कर ले जाओ ताकि सेवा का यह हर्षोन्माद 'दासता के केन्द्र' को आनन्द और उल्लास के भर दे। वह मशरिकुल-अज़कार स्वामी की पहली देखी जा सकने वाली और प्रत्यक्ष संस्था है। अतः, इस सेवक की आशा है कि प्रत्येक नेक और सदाचारी व्यक्ति अपना सर्वस्व न्योछावर कर देगा, अधिक-से-अधिक प्रसन्नता और उल्लास दिखलायेगा और मिट्टी और गारा-मसाला ढोने में आनन्द का अनुभव करेगा ताकि यह 'दिव्य भवन' बन कर तैयार हो सके, प्रभुधर्म का प्रसार हो सके और दुनिया के हर कोने से मित्रगण पूरे निश्चय के साथ इस महान कार्य को पूरा करने के लिये उठ खड़े हों। अगर अब्दुल-बहा कैद में नहीं होते और उनके रास्ते में बाधाएँ नहीं होतीं तो वह स्वयं शीघ्रता से इश्काबाद जाते और असीम आनन्द व हर्ष के साथ मशरिकुल-अज़कार के निर्माण के लिये मिट्टी ढोते। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मित्रों के लिये यह उचित है कि वे उठ खड़े हों और मेरी जगह पर सेवा करें ताकि कम समय में यह भवन सबकी आँखों के सामने प्रकाशमान हो सके, 'आभा सौन्दर्य' के उल्लेख में ईश्वर के प्रियगण लग जाएँ, तड़के भोर के समय मशरिकुल-अज़कार का मधुर गान ईश्वर के लोक तक गुंजायमान हो सके और ईश्वर के बुलबुल की गीत-लहरी 'परम महिमाशाली साम्राज्य' के निवासियों को आनन्द और उल्लास से भर सके। इस प्रकार हृदय उल्लास से भर जाएँगे, आत्माएँ आनन्दातिरेक से तरंगित होंगी और मन प्रकाशित होंगे। सच्चे लोगों की यह सबसे बड़ी आशा है, वैसे लोगों की सबसे प्रिय इच्छा है जो ईश्वर के निकट हैं।

-विश्व न्याय मंदिर